हिन्दी भाषा - एक परिचय

हिन्दी भारत की राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रुप में मानी जाती है। यह मुख्यतः बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश में बोली जाती है। हिन्दी का संबंध भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत से है। संस्कृत भाषा भारत में लगभग 1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक बोली जाती रही है। संस्कृत के बाद पालि भाषा अस्तित्व में आई, पालि का काल लगभग 500 ई.पू. से 1 ई. तक है। पालि के बाद प्राकृत का प्रचार हुआ, प्राकृत का काल 1 ई. से लगभग 500 ई. तक है। प्राकृत के बाद अपभ्रंश भाषा का काल आता है जो 500 ई. से 1000 ई. तक है। इन सभी भाषाओं में विपुल साहित्य विद्यमान है, इससे यह स्पष्ट होता है कि ये भाषाएं न केवल बोलचाल के रुप में प्रयुक्त की जाती थीं बल्कि इनमें श्रेष्ठ साहित्य की रचना भी की गई है। 1000 ई. के आसपास अपभ्रंश से ही हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती आदि आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ है।

आज की भाषा हिन्दी दिल्ली के आसपास की बोली पर आधारित है। जिसे खड़ी बोली अथवा खड़ी हिन्दी भी कहते हैं। खड़ी बोली हिन्दी के तीन रुप हैं:

(क) हिन्दुस्तानी - जो हिन्दी प्रदेश में बोलचाल की भाषा है तथा जिसमें केवल संस्कृत, अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं के सरल शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(ख) उर्दू - हिन्दुस्तानी की तरह ही उर्दू भी खड़ी बोली हिन्दी की एक शैली है, जिसमें अरबी, फ़ारसी के कठिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(ग) हिन्दी - हिन्दुस्तानी, उर्दू तथा हिन्दी मूलतः एक ही भाषा है (आज जिन्हें अलग-अलग करने का प्रयास किया जा रहा है।) इन तीनों का व्याकरण एक ही है। अन्तर केवल शब्दों का हैं। हिन्दी में संस्कृत के कठिन शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है, जिन्हें तत्सम कहते हैं। हिन्दी साहित्य में इसी हिन्दी (संस्कृतनिष्ठ) का प्रयोग हुआ है।

इस प्रकार हिन्दी की इन तीन शैलियों का मूल आधार बोलचाल की हिन्दुस्तानी है, उर्दू का प्रयोग प्रायः हिन्दी में नहीं होता तथा हिन्दी का प्रयोग उर्दू में नहीं होता है। राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा होते हुए भी हिन्दी का प्रयोग न करने अथवा अपेक्षाकृत कम करने के दो प्रमुख कारण है:

1. हमारी मानसिकता।
2. हिन्दी भाषा का समुचित ज्ञान न होना।

मानसिकता को परिवर्तित करने का कार्य हमें स्वयं ही करना होगा, किन्तु हिन्दी भाषा के समुचित ज्ञान के अभाव में जो हिचकिचाहट है वह दूर की जा सकती है। उच्चारण एवं लेखन संबंधी त्रुटियों से भी बचा जा सकता है। इसके लिए निम्न जानकारी अपेक्षित है:

वर्णमाला और लेखन

हिन्दी में देवनागरी वर्णमाला ही प्रयोग की जाती है, किन्तु देशज, (बोलियों के शब्द) अरबी, फ़ारसी एवं अंग्रेजी के शब्दों के सम्मिलित किए जाने के कारण कुछ नई ध्वनियों एवं चिन्हों का भी प्रयोग किया जाता है। इन आगत शब्दों को सही उच्चारण प्रदान करने के लिए इनका प्रयोग किया जाना आवश्यक है।

डा. आशा कूपर, रीडर, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की

स्वर

ऑ (जैसे- ऑफिस, डॉक्टर, कॉलेज)

व्यंजन

ड़, ढ़ (देशज शब्दों में इनका प्रयोग किया जाता है)

जैसे - घोड़ा, पढ़ाई, खिचड़ी, पगड़ी, चढ़ाई।

क़, ख़, ग़, ज़, फ़ जैसे - क़ानून, अख़बार, फ़ैसला, ग़म, क़ागज़।

(अनुस्वार, इसका उच्चारण ड़, ण, न, म, की तरह ही होता है।) जैसे गंगा, पंडित, चंचल, आनंद, संबंध आदि।

: (विसर्ग, इसका उच्चारण है की तरह होता है) जैसे- वस्तुतः प्रायः

ँ(अनुनासिक अथवा चंद्रबिन्दु ; इसका प्रयोग स्वर को अनुनासिक बनाने के लिए होता है, जैसे- उगली-उंगली)। चन्द्रबिन्दु न तो स्वर है न व्यंजन, वह स्वर को अनुनासिक बनाने वाला चिह्न मात्र है।

संयुक्त वर्ण

अं, अः, क्ष, त्र, ज्ञ को अलग वर्ण नहीं मानते है वे एक ध्वनि न होकर दो ध्वनियों के मिले हुए रुप हैं-

अं = अ + . अः = अ + : क्ष = क + ष

त्र = त् + र ज्ञ = ज+ --- अब इसका उच्चारण ग्यँ अथवा ग्य होता है।

श्र = श् + र

"द" के मुख्य संयुक्त रुप ये है:

द् + द = द्द (गददा) द् + ध = द्ध (अर्द्ध)

द् + म = ह्म (पह्म) द् + य = द्य (विद्यालय)

द् + व = द्व (द्वन्द्व)

इ -ई, उ-ऊ के उच्चारण की समस्या -दीर्घ ई तथा दीर्घ ऊ के उच्चारण में प्रायः कोई अशुद्धि नहीं होती है। किन्तु ह्रस्व इ और उ के उच्चारण में प्रायः अशुद्धि हो जाती है जिससे लेखन में भी त्रुटि हो जाती है। इस संबंध में दो बाते याद रखने की हैं- (1) ई और ऊ हिन्दी के अपने शब्दों के अंत में कभी नही आते, वे अतं में जब भी आते हैं तो अन्य भाषाओं से हिन्दी में लिए गए शब्दों में, जैसे -

इ - भक्ति, शक्ति, जाति, कवि।

उ - वस्तु, हेतु, धातु।

(2) ब्रज तथा बुन्देली क्षेत्र में शब्द के मध्य से ह्रस्व इ, उ का बोलने में प्रायः लोप कर देते हैं। जैसे- कविता, कव्ता, करुणा- करणा, आदि।

भाषा संबंधी अशुद्धियां कई कारणों से हो सकती हैं। सुविधा के लिए इन्हें चार वर्गों में रखा जा सकता है:

(1) संरचना संबंधी नियमों की अज्ञानता

(2) नियमों का अनुपयुक्त प्रयोग

(3) अर्थबोध के औचित्य का अभाव

(4) मानक प्रयोगों का आभाव

1. सरंचना संबंधी नियमों की अज्ञानता

यह अशुद्धि वर्तनी (Spelling) स्तर पर, शब्द रुप एवं अन्विति स्तर पर भी हो सकती है।

(क) वर्तनी स्तर - कृश्न (कृष्ण), जन्ता (जनता), परकाश (प्रकाश)।

(ख) शब्द रुप बच्चा से कहो (बच्चे से कहो), लड़का ने बताया (लड़के ने बताया)।

(ग) अन्विति स्तर- कैसा किताब (कैसी किताब), यह बात मानना होगा (यह बात माननी होगी)। अन्विति का अर्थ है, लिंग, वचन, पुरुष एवं काल की एकरुपता।

2. नियमों का अनुपयुक्त प्रयोग

जब भाषा का प्रयोग करते समय स्थान और व्यक्ति के अनुकूल औचित्य का ध्यान नहीं रखा जाता, तब भाषा अशुद्ध हो जाती है। उदाहरण के लिए नौकर का मालिक से अथवा पुत्र का पिता से या छात्र द्वारा अध्यापक से यह कहना कि - तू कुछ जानता तो है नही - गलत प्रयोग है। आप कुछ जानते तो हैं नहीं - शुद्ध प्रयोग है।

3. अर्थ बोध के औचित्य का प्रभाव

जहॉ प्रयुक्त भाषा का अर्थ बोध सही न हो, जैसे - उसकी सगी मॉ की उम्र उससे कम है। व्याकरण की दृष्टि से वाक्य शुद्ध है किन्तु अर्थ बोध की दृष्टि से अशुद्ध है। सगी मां सन्तान से आयु में बड़ी होती है।

4. मानक प्रयोग का अभाव

कई बार कथन उचित प्रतीत होता हैं जबकि भाषा के मानक रुप (standard form) की दृष्टि से वे अशुद्ध होते हैं, जैसे

(क) मेरे को तुम पुस्तक दो। अशुद्ध मुझे/मुझकों पुस्तक दो (शुद्ध)

(ख) मैने तुरन्त चले जाना है। (अशुद्ध) मुझे तुरन्त जाना है (शुद्ध)

(ग) आप कल तक यह काम कर देना (अशुद्ध) आप कल तक यह काम कर दें या आप कल तक यह काम कर दीजिए (शुद्ध)

वर्ण लेखन और वर्तनी की अशुद्धियां -

(अ) स्वर संबंधी अशुद्धियाँ

(क) दीर्घीकरण - वर्तनी की बहुत सी अशुधियाँ शुद्ध उच्चारण न करने और सावधानी से न सुनने के कारण होती हैं, इसलिए बोलने में ह्रस्व स्वरों को दीर्घ कर देते हैं। जैसे - अत्याधिक, अभाव, आधीन, श्रीमति, वस्तू, कवी अशुद्ध हैं, अत्यधिक, अभाव, अधीन, श्रीमती, वस्तु, कवि शुद्ध हैं।

(ख) ह्रस्वीकरण - अनेक बार वक्ता स्वर की मात्रा दीर्घ होने पर ह्रस्व रुप में बोलता है, इस कारण वर्तनी अशुद्ध लिखता है। जैसे - अजाद, उपरी, परिक्षा, मालुम, बिमारी लिखना अशुद्ध है। आजाद, ऊपरी, परीक्षा, मालूम, बीमारी लिखना शुद्ध है।

(ग) स्वर लोप - कई बार वक्ता शब्द में स्वर लोप कर देता है इस प्रकार लिखने में भी अशुद्धि हो जाती है। जैसे - आज्कल, चम्का, प्रन्तु, अशुद्ध हैं। आजकल, चमका, परन्तु शुद्ध हैं।

(घ) स्वरागम - कई बार अज्ञानतावश अतिरिक्त स्वर का उच्चारण किया जाता है और वर्तनी भी उसी रुप में लिखी जाती है। जैसे - उतीरण, करम, भसम, करमचारी, अशुद्ध है। उत्तीर्ण, कर्म, भस्म, कर्मचारी, लिखना एवं बोलना शुद्ध हैं।

(आ) **व्यंजन संबंधी अशुद्धियाँ**

(1) स-श-ष की समस्या -स व श के उच्चारण में स्पष्ट भेद है। किन्तु हिन्दी में मूर्धन्य "ष" का उच्चारण भी "श" के समान किया जाता है। जिससे वर्तनी अशुद्ध हो जाती है, जैसे- नमश्कार, पोशक, प्रकास, प्रशाद, शाशन अशुद्ध हैं। नमस्कार, पोषक, प्रकाश, प्रसाद, शासन, शब्द शुद्ध हैं। भिन्न अर्थ द्योतक हैं - शंकर- संकर, शेर- सेर, शाल - साल।

(2) व-ब की समस्या - "व" को प्राय: "ब" बोलकर वैसा ही लिखने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है, कई बार ऐसी स्थिति में अर्थ भी बदल जाता है। शुद्ध रुप है- वंदना, वाणी, विश्व, व्रत, बार (chance) वार (दिन), नवाब।

(3) न-ण की समस्या - कुछ लोग "न" के स्थान पर "ण" और " ण" के स्थान पर "न" का उच्चारण करते हैं। अंग्रेजी में "ण" ध्वनि न होने के कारण भी हिन्दी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है। उदाहरण के लिए कल्याण, दर्पण, प्रणाम, वीणा, रानी (राणी अशुद्ध है) लिखना एवं बोलना शुद्ध है।

(4) य-ज की समस्या - "य" के स्थान पर "ज" बोलने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है - जोग, जज्ञ, जजमान का प्रयोग करना गलत है इसके स्थान पर, योग, यज्ञ, यजमान का प्रयोग करना चाहिए।

(5) क्ष-छ की समस्या - क्षमा, क्षमता, नक्षत्र के स्थान पर छमा, छमता, नच्छत्र उच्चारण करने से वर्तनी अशुद्ध होती है।

(6) ड-ड़ की समस्या - प्राय: उच्चारण के समय लोग "ड़" का प्रयोग करते हैं किन्तु लिखते समय "ड" का प्रयोग करते हैं। सड़क, घोड़ा, बड़ा, पड़ा - इनमें ड़ का प्रयोग किया जाता है किन्तु डमरु, रोड, डर में "ड" का प्रयोग होता है।

(7) ढ और ढ़ की समस्या - इस प्रकार की अशुद्धि से बचने के लिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि "ढ" एवं "ड" सदैव शब्द के पहले अक्षर के रुप में आता है। शब्द के मध्य व अन्त में "ढ़" ही आता है। जैस- चढ़ाई, पढ़ना, ढंग, ढकोसला।

(8) ट-ठ -यद्यपि इन दोनों के उच्चारण में स्पष्ट अन्तर है किन्तु "ष" को "ट" तथा "ठ" के साथ मिलाकर संयुक्त अक्षर बनाते समय अशुद्धि हो जाती है। शुद्ध वर्तनी है - क्लिष्ट, पृष्ठ, घनिष्ठ, ज्येष्ठ, यथेष्ठ आदि।

(9) क़ ख़ ग़ ज़ फ़ में पाँचों ध्वनियाँ फ़ारसी से हिन्दी में आयी हैं। आजकल हिन्दी में "ज़" और "फ़" का प्रयोग किया जा रहा है। कई बार बिन्दु गलत स्थान पर लगने से अर्थ बदल जाता है। जैसे- ज़रा (थोड़ा-सा), जरा (बुढ़ापा), फ़न (कला) फन (सांप का), राज़ (रहस्य) राज (शासन)।

(10) द्य-घ की समस्या - " द्य" (द्+य) वर्ण को भ्रमवश "घ" समझकर उसके स्थान पर घ का प्रयोग किया जाता है। जैसे - विद्यालय, विद्यार्थी, को विघालय, विधार्थी लिखना अशुद्ध है।

(11) र की समस्या - हिन्दी वर्तनी मे "र" के चार रुप प्रयुक्त होते हैं-राम, क्रम, धर्म, राष्ट्र। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए:

(क) यदि "र" के बाद कोई स्वर आ रहा हो तो पूर्ण "र" लिखते हैं, जैसे - राज्य, राम, चरण, रेखा।

(ख) यदि "र" से पूर्व कोई व्यंजन हो जिसमें "र" को जोड़ना है तब उसे व्यंजन के नीचे चिह्न लगाते हैं। जैसे -क्रम, प्रेम, भ्रम।

(ग) यदि "र" के बाद कोई व्यंजन हो तो उस व्यंजन के ऊपर इसका चिह्न लगाते हैं इसे रेफ भी कहते हैं। जैसे-आशीर्वाद, कर्म, दुर्गम, दुर्गुण।

(घ) "र" को ट ठ ड ढ आदि व्यंजनों में इस प्रकार प्रयोग किया जाता है- ड्राम, ट्रेन, राष्ट्र।

र व्यंजन में उ और ऊ की मात्राएं अन्य व्यंजनों की भांति नहीं लगती हैं। र+ उ = रु - गुरु, रुड़की

र + ऊ = रू - रूप, शुरू

(12) ऑ की समस्या - यह अंग्रेजी से आया हुआ --(आ का गोलाकार रुप) स्वर है। इन शब्दों को उच्चारण की शुद्धता प्रदान करने के लिए देवनागरी लिपि में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग सही न करने से कई बार अर्थ भेद हो जाता है। जैसे - काफ़ी (पर्याप्त) कॉफी (coffee), काल (समय) कॉल (टेलीफ़ोन)

बाल (केश) बॉल (गेंद), हाल (कुशल-क्षेम) हॉल (सभागृह)।

लिपि का समुचित ज्ञान न होना

नागरी लिपि की मात्राओं के ऊपर-नीचे और आगे-पीछे लगने के कारण, संयुक्त व्यंजनों के स्वतंत्र रुप होने, तथा कुछ ध्वनि - चिह्नों में अंतर का ज्ञान न होने आदि के कारण प्राय: लेखन में अशुद्धियॉ हो जाती हैं। इसे कई उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है:

(1) हस्व इ की मात्रा पीछे लगती है, इसका ठीक ज्ञान न होने से "कि" को "की" लिख दिया जाता है। ये अर्थ की दृष्टि से भिन्न हैं:

(i) कि -that, उसने कहा कि वह आज नही आएगा।

(ii) की - of स्त्रीलिंग (संबंध वाचक) राम की किताब, सीता की मेज।

(iii) की -क्रिया (भूतकाल, स्त्रीलिंग) उसने परीक्षा उत्तीर्ण की।

संयुक्त व्यंजन में यह मात्रा पहले आती है- निश्चित, चन्द्रिका लिखना चाहिए, निश्चित, निश्चित चन्द्रिका गलत है।

(2) ऋ की मात्रा है तथा "रा" का एक रुप हे। ये एक दूसरे का स्थान नहीं ले सकते हैं। कृपया को क्रपा या कृष्ण को क्रष्ण लिखना अशुद्ध है। इसी प्रकार ब्रज को बृज लिखना अशुद्ध है। अर्थात "C" तथा "," में अंतर करना चाहिए। उच्चारण में "ऋ" को "र" प्रयोग होने लगा है जिससे लेखन में त्रुटि हो जाती है।

(3) ए तथा ऐ --(क) -- (कै) के भ्रम में बदुधा ऐ, ऐ लिखते हैं जो गलत है। उदाहरहण के लिए - ऐतिहासिक, सफलताऐं आवश्यकताऍ आदि लिखना अशुद्ध है। इन्हें ऐतिहासिक, आवश्यकताएँ (आवश्यकतायें) सफलताएँ आदि लिखना शुद्ध है।

वैकल्पिक "य" - हिन्दी में कुछ संज्ञा, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय शब्दों में "य" का विकल्प से प्रयोग मिलता है। पहिए-पहिये, किराए-किराये, वस्तुऍ- वस्तुयें, महिलाऍ-महिलायें, नए-नये, नई-नयी, गए-गये, लिए-लिये। संस्कृत वर्तनी का "य" -अनेक तत्सम शब्दों में परम्परागत रुप से "य" लिखा जाता है, यद्यपि इन शब्दों के वास्तविक उच्चारण में "ई" है स्थायी, उत्तरदायी, धराशायी, वाजपेयी आदि लिखना शुद्ध है।

मानक वर्तनी

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा कुछ शब्दों की मानक वर्तनी निर्दिष्ट की गई है:

(i) पंचामाक्षर -ड़, ण, न, म, के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग शुद्ध है, जैसे -संबंध, परंपरा, हिंदी आदि। यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा वही पंचमाक्षर दुबारा आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रुप में परिवर्तित नहीं होगा। जैसे- वाडमय, अन्य, अन्न, सम्मेलन, उन्मुख, सम्मति। संन्यासी शब्द अपवाद है जिसमें अनुस्वार और "न" दोनों होते है।

(ii) हिन्दी में कुछ शब्दों के दो-दो रुप बराबर चल रहे हैं अत: इन्हें मान्य समझा गया है। जैस-गरदन/गर्दन, गरमी/गर्मी, कुरसी/कुर्सी, बीमारी/बिमारी।

(iii) संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों का त्यों ग्रहण किया जाए। ब्रहमा, चिह्न, उऋण लिखना शुद्ध है।

(इ) संधि नियमों की जानकारी का अभाव

संधि नियमों की अज्ञानता के कारण भी वर्तनी अशुद्ध हो सकती है। जैसे-तदुपरांत, अनधिकार, सद्गुण, पूजनीय अथवा पूज्य लिखना शुद्ध है।

(ई) शब्द रचना की जानकारी का अभाव

शब्द रचना की जानकारी न होने से प्राय: अशुद्धियॉ हो जाती हैं। उदाहरण के लिए "इक" प्रत्यय लगने पर

पहला अक्षर दीर्घ हो जाता है। जैस- सामाजिक, व्यावहारिक, ऐतिहासिक, नैतिक, वैदिक, पौराणिक किन्तु श्रमिक, क्रमिक, श्रंगारिक आदि शब्द अपवाद हैं।

कुछ अन्य नियम

(1) हिन्दी में विभक्ति चिह्न संज्ञा शब्दों में अलग लिखे जाते हैं। जैसे- राम ने, छात्र को, आदि। सर्वनाम शब्दों में ये चिह्न शब्द के साथ मिलाकर लिखें-उसने, उसको, इसमें आदि।

(2) सर्वनाम के साथ यदि दो विभक्ति चिह्न हैं तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखें - उसके लिए, इनमें से आदि।

(3) सर्वनाम और विभक्ति चिह्न के बीच " ही", तक आदि हो तो विभक्ति से अलग लिखे । जैसे - आप ही के लिए,मुझ तक को आदि।

(4) हाइफ़न का प्रयोग स्पष्टता के लिए अवश्य करें। राम-सा, तुम-जैसा, जहाँ अर्थ स्पष्ट करना हो, भू-तत्व, (पृथ्वी-तत्व), भूतत्व (भूत होने का भाव)।

(5) प्रत्येक तथा हर का प्रयोग एक वचन के साथ करना चाहिए।

(6) मात्रा एवं संख्या शब्दों का उचित प्रयोग - सभा में बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। अधिक मात्रा में भोजन करना हानिकारक है।

(7) दर्शन, प्राण, नेत्र, हस्ताक्षर आदि शब्दों का प्रयोग बहुवचन में ही किया जाता है।

(8) अप्राणिवाचक संज्ञा शब्दों के लिंग व्यवहार से निर्धारित किए जाते हैं। जिन अकारान्त शब्दों के रुप बहुवचन में परिवर्तित नहीं होते हैं वे प्रायः पुल्लिग होते हैं। जैसे - घर, मकान, भवन, खेत। जिन शब्दों के रुप बहुवचन में बदल जाते हैं वे प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे - किताब-किताबें, मेज-मेजें, पेन्सिल-पेन्सिलें, दवा - दवाएँ - पेन्सिलें आदि।

(9) संबंध वाचक चिह्न -का, के, की का प्रयोग आगे आने वाले संज्ञा शब्द के लिंग और वचन के आधार पर किया जाता है जैसे - भवन का कमरा, भवन के कमरे, मोहन की कमीज, मोहन की कमीजें। किन्तु बाद में आने वाले संज्ञा शब्दों में विभक्ति चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जैसे - भवन के कमरे में चार पंखे हैं।

(10) हिन्दी में समय वाचक शब्द अलग-अलग रचना में आते हैं।

(क) "इस समय", "उस समय", "किस समय" के साथ "में" को अंग्रेजी के at this time की तरह नहीं किया जाता है।

(ख) दिन - रात के विभाजन में प्रायः "को" लगाया जाता है, किसी-किसी में में का भी प्रयोग होता है। रात में/को, सुबह को/सुबह, दोपहर को/में, तीसरे पहर में "को" नही लगता है। शाम में/को।

(ग) आज, कल, परसों - विभक्ति चिह्न नहीं लगता है। दिन में "को" लगता है- सोमवार को आना है। लगता है- फरवरी में कार्यक्रम होगा। महीनों में "में" इस सप्ताह में "को" नहीं लगता है।

हिन्दी भाषा के प्रयोग में प्रायः इस प्रकार की अशुद्धियाँ होने की संभावना रहती है जिसके कारण इस भाषा का प्रयोग करने में लोग कतराते हैं। एक विस्तृत भू-खण्ड और बहुभाषी समाज में व्यवहृत किसी भी विकासशील भाषा के उच्चारणगत गठन में अनेकरुपता मिलना स्वाभाविक है उसे व्याकरण के कठोर नियमों से जकड़ा नहीं जा सकता, किन्तु लेखन में एकरुपता तथा मानक स्तर अवश्य निर्धारित होना चाहिए।

****